REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | APRIL - 2024

कथक नृत्य में अभिनय और भाव के प्रायोगिक स्वरुप का अध्ययन

श्रीप्रकाश तिवारी,
केन्द्र प्रमुख, ललित कला विभाग एवं रायगढ़ कथक केन्द्र,
डॉ सी वी.रमन विश्वविद्यालय करगी रोड बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश –

कथक नृत्य भारत की सांस्कृतिक परम्परा का अभिन्न अंग है यह प्राचीन नृत्य कला मंदिरों के प्रांगण में पल्लवित हुई और जो राजाओं तथा राज्यों के संरक्षण में समृद्ध होकर संपूर्ण विश्व में प्रतिस्थापित है कला में रचनात्मकता एक महत्वपूर्ण विषय है कला के विभिन्न रूपों के साथ–साथ रचनात्मकता निरंतर परिवर्तित होती है कला का चाहे जो भी रुप स्वरुप हो उसके प्रस्तुतीकरण में रचनात्मकता सहज ही परिलक्षित होने लगती है इसका मूल का कारण मानो कि मानवीय प्रवृत्ति की निरंतर परिवर्तनशील और कुछ नया की चाह हो सकती है प्राचीन समय स मनुष्य की इन्हीं प्रवृत्तियों ने ही कलाओं को चलाएं मान बनाए रखा और वर्तमान में यह अपनी विविध रूपों में अलग–अलग नामों से जानी जाती है। कथक नृत्य मुख्य रूप से भाव प्रधान नृत्य शैली है जो प्रस्तुतीकरण के माध्यम से उभर कर सामने आती है। गीत ,वाद्य, नृत्य, नाटक, चित्र कला, और साहित्य आदि विधाओं में रचनाकारों की रचनात्मकता को स्पष्ट रूप से देखा सुना वह समझा जा सकता है जिसके द्वारा स्वर के उतार–चढ़ाव से हृदय गत भावों की अभिव्यक्ति की जाती है।

मुख्य शब्द – कथक नृत्य, अभिनय, भाव , प्रायोगिक इत्यादि।

प्रस्तावना –

शिक्षा को जीवन की प्रयोगशाला कहा जाता है शिक्षा का मूल उद्देश्य राष्ट्र निर्माण हेतु सभ्य एवं सुसंस्कृत चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करना शिक्षा प्रणाली में समग्रता का आभाव है आधुनिक प्रणाली में मुख्य बल तकनीकी और पुस्तक की ज्ञान से संपन्न भद्रलोक वाले वैश्विक परिदृश्य का निर्माण करना मात्र है यह शिक्षा प्रणाली तथा कथित शिक्षकों का ऐसा वर्ग तैयार करना चाहती है जो जिज्ञासा ना करें, मात्र वर्णन करें, बिना सोचे समझे स्वीकार कर ले, जिज्ञासा ना करें ,समझौता कर ले ,स्वाभाविक रूप से इस वातावरण में आत्मिक शक्ति तथा जीवन मूल्यों क प्रति निर्धारण प्रतिबंध विलुप्त होता जा रहा है, इस वातावरण में अनुशासन की सराहना की जाती है यह प्रतिभा की सहज अभिव्यक्ति पर भृकुटिया तानी जाती है।

विषयवस्तु –

''जॉन होल्ट के अनुसार'' वह चाहते थे कि ऐसा वातावरण जहां किसी प्रकार का भय ना हो जैसे घंटी का डर , प्रवेश का डर , शिक्षा का डर, व्यवस्था का डर , परीक्षा का डर , गलत उत्तर देने का डर , एवं सर्वश्रेष्ठ ना कर पाने का डर, सीखने के लिए ऐसा वातावरण हो जो–जो बच्चों को आने के लिए आमंत्रित करें, ललचाएँ, आकर्षित करें। बच्चे जो सीखे अपनी रुचि से सीखे मन से सीखे बिना भ्रम और ओबन के सीखें। बच्चे जो सीखे वह परीक्षा केंद्र ना होकर जीवन के लिए हो आनंद व आत्मविश्वास तथा आत्म गौरव के लिए हो इस

प्रकार जॉन होल्ड का चिंतन डर के विरुद्ध आनंद और बंधन के विरुद्ध मुक्ति की और पास–फेल के बजाये सीखने की उपलब्धियों व सर्जन क्षमता पर आधारित है राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुपालन के अनुसार नई शिक्षा नीति के तहत 3 वर्षीय स्नातकोत्तर कोर्स करने के बाद परास्नातक में दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों को 1 साल पूर्ण होने के बाद पढ़ाई छोड़ते हैं तो उन्हें डिप्लोमा इन पी.जी. मिलेगा परास्नातक के बाद शोध के लिए 6 महीने का कोर्स वर्क करने के बाद भी पढ़ाई छूट गई तो डिप्लोमा इन रिसर्च का प्रमाण पत्र मिलेगा यदि विद्यार्थी में स्नातक में 1 साल किया और आगे नहीं पढ़ा तो उसे सर्टिफिकेट ऑफ बैचलर मिलेगा एवं 2 साल की पूर्ण होने के बाद पढ़ाई छुटने पर डिप्लोमा इन बैचलर मिलेगा 3 वर्ष की पढ़ाई पूरी होने के बाद पढ़ाई छोड़ने पर पहले की ही तरह स्नातक उपाधि मिलेगी इसके बाद वह परास्नातक कर सकता है स्नातक चौथे वर्ष में प्रवेश सिर्फ उन्हें ही मिलेगा जिसका कुल ग्रेट 7.5 सीजीपीए होगा 4 वर्ष का स्नातक और पूर्ण होने पर स्नातक की उपाधि मिलेगी यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कुछ नियम है। जिसे हमारे प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी ने लागू किया है जिसका पालन करना हमारा कर्तव्य है।

कथक नृत्य मुख्य रूप से भाव प्रधान नृत्य शैली है जो प्रस्तुतीकरण के माध्यम से उभर कर सामने आती है। गीत ,वाद्य, नृत्य, नाटक, चित्र कला, और साहित्य आदि विधाओं में रचनाकारों की रचनात्मकता को स्पष्ट रूप से देखा सुना वह समझा जा सकता है जिसके द्वारा स्वर के उतार–चढ़ाव से हृदय गत भावों की अभिव्यक्ति की जाती है यह अभिव्यक्ति अभिनय के द्वारा होती है यहां अभिनय शब्द का अर्थ हुआ कवि नाटककार या रचनाकार के मुख्य भागों की ओर दर्शकों को ले जाना अर्थात क्रोध, स्नेह ,घृणा, आदि मन के भावों को प्रकट करने की चेष्टाओं द्वारा इस भाव का अनुकरण करना यहां अभिनय को बताना जरूरी है अभिनय के चार प्रकार है । इस प्रकार से भरतमुनि ने अभिनय के चार प्रकार बतलाये है–

आंगिकों वाचिकश्चैव आहार्य सात्विकस्तथा।
ज्ञेयस्तवभिमयों विप्राश्चतुर्द्वा परिकीर्तितः।।

इस श्लोक मे यह कहा गया है कि – अनेक अर्थों को नाट्य प्रयोग द्वारा शाखा अंग उपांग से युक्त प्रदर्शित करना अभिनय है।

(1) आंगिक अभिनय –

आंगिक अभिनय को जानना प्रत्येक नृतक के लिए जरूरी है क्योंकि अपने दैनिक जीवन में जो मानसिक क्रियाकलाप बहुत अधिक होते हैं किंतु रंगमंच पर अभिनेता इनका प्रदर्शन अपने स्वाद व गीतों के अलावा मुख्य रूप से शारीरिक भंगिमा के द्वारा ही करता है इसी कारण अभिनय भेदो में आंगिक अभिनय को स्वर प्रथम स्थान दिया गया है प्राचीन शास्त्रों में शरीर के अलग–अलग चलन दिए गए हैं जिसे भावों को प्रस्तुत करने में आसानी होती है।

(2) वाचिक अभिनय –

कथक नृत्य की परंपरा वाचिक अभिनय से ही हुई है राम के दरबार में लव और कुश ने महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण को सांगीतिक कथा के रूप में, जनमानस में गाकर अपने अधिकारों को प्राप्त किया था और यही कथावाचन करने वाले लोग कुशीलव व कथक कहलाये कथक नृत्य में बोलो कि पढ़न्त या भाव बताते समय गीत के शब्दों का उच्चारण करने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

(3) आहार्य अभिनय –

कथक नृत्य में नृतक जिस भी भाव की प्रस्तुति करता है उसके अनुरूप वह रूप सज्जा वस्त्र आभूषण सजीव व मुखौटे लगाकर अपनो प्रस्तुति करता है आज के समय में नृत्य नाटिकाओं का प्रयोग बहुत ही अधिक मात्रा में किया जाता है जिसमें नर्तक अलग–अलग वेशभूषा धारण कर अपने भावों को प्रस्तुत करता है पुराने गुरु के समय काल में एक ही कला गुरु विभिन्न प्रकार के भावो से ही अपनी प्रस्तुति देने में पारंगत होते थे।

(4) **सात्विक अभिनय** –

यह चारों प्रकार के अभिनव में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है वहीं इसका प्रदर्शन सबसे कठिन भी होता है नर्तक जिस गीत भाव को सुनकर अपनी अन्तर आत्मा से उस भावों को महसूस कर अभिव्यक्ति करता है यदि वह श्रोताओं के मन मस्तिष्क में जा वह स्वयं महसूस कर रहा हूं उसे उतार सकता है तो वह सात्विक भाव कहलाता है यह भाव तभी संभव है जब नर्तक प्रस्तुत करने के दौरान उस भाव में डूब जाए तभी यह सात्विक भाव अपने आप प्रगट होता है।

(I-) भाव प्रदर्शन की विशेषता हमारे भारत देश की विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों में प्रमुख रूप से भाव प्रदर्शन किया जाता है किंतु कथक के भाव प्रदर्शन की अपनी मौलिक विशेषताएं हैं जहां भरतनाट्यम आदि अन्य नृत्य शैलियों के भाव प्रदर्शन में भी आंगिक अभिनय और हस्त मुद्राओं की प्रधानता रहती है वहां कथक का भाव प्रदर्शन अधिक सहज, स्वाभाविक और सात्विक अभिनय प्रधान होता है। नृत्य की अन्य शैलियों का भाव प्रदर्शन नाट्यधर्मी अधिक है किंतु हमारा कथक नृत्य लोग धर्मी तत्व की प्रधानता अधिक है। पुराने कथाकारों ने अपने अनुभव और प्रयोगों के आधार पर भाव प्रदर्शन के मुख्य तीन भेद बताए हैंः–

1. समकः– जिसमें तोड़ा, टुकड़ा लेकर या गत निकास में पलटा लेकर जब सम पर कोई भाव दिखाया जाता है उसे समक भाव कहते हैं।
2. कथानकी भावः– जब नर्तक किसी कथानक में भाव प्रस्तुत करता है उसे कथानकी भाव कहते हैं।
3. गीतमान भावः– गीत मान भाव किसी गीत ठुमरी में भाव बताने को गीतमान भाव कहते हैं।

(II-) कथक नृत्य प्रस्तुति क्रम की बात की जाए तो नृत्य के प्रारंभ और अंत में भाव से ही होता है कथक नृत्य की प्रस्तुति का प्रारंभ विभिन्न देवी–देवताओं की स्तुति से की जाती है जिसमें भक्ति रस का भाव निहित होता है ऐसे तो विभिन्न भाव और रस देखे जा सकते हैं किंतु कथक नृत्य में ठुमरी, गजल, गीत ,दोहा, पद ,नजम अष्टपदी, भजन ,कजरी ऐसे अनेक भाव प्रमुख है, जिसमे विभिन्न प्रकार के भावों का समावेश होता है। जिस प्रकार शरीर को पोषित होने के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता होती है उसी प्रकार नृत्य करने के लिए लय ताल के साथ भाव का होना भी बहुत ही जरूरी है क्योंकि बिना अभिनय के नृत्य के सौंदर्य की कल्पना भी नहीं कर सकते यहा सौन्दर्य का तात्पर्य भाव के उस रूप से है जो नर्तक कलाकार के अंदर उपजने वाले अभिनय को तन्मयता के साथ दर्शकों को भी हुबहू संप्रेषित भाव की अभिव्यक्ति करा दे जो कलाकार जिस भाव से किसी भी भाव अंग को प्रस्तुत कर रहा हो यदि वह ठुमरी या भजन जिस भो रस को अपने अंदर महसूस कर रहा है उसकी प्राप्ति वह दर्शकों को भी करा दे यही असली अर्थ में अभिनय का सौन्दर्य है। अभिनय दर्पण में उल्लेख मिलता है –

यतो हस्तस्ततो दृष्टिः यतो दृष्टिस्ततो मनः।
यतो मनस्ततो भाव यतो भावस्ततो रसः।।

अर्थात जहां हाथ जाए वही दृष्टि को जाना चाहिए जहां दृष्टि जाए वही मन को जाना चाहिए जहां मन जाए वही भाव रहना चाहिए क्योंकि जहां भाव है वही रस की उत्पत्ति होती है।

निष्कर्श –

निष्कर्ष रुप में कह सकते हैं कि कथक नृत्य में अभिनय का महत्वपूर्ण योगदान है साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रम में इसे लागू करना महत्वपूर्ण होगा क्योंकि नृत्य का महत्वपूर्ण पक्ष ही भाव है। कथक ने शास्त्र की सीमा में रहते हुए भी भाव प्रदर्शन के क्षेत्र म नित–नव प्रयोग किए हैं इसलिए कथक का भाव, सौंदर्य सबसे विरल और सहज आकर्षक है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अभिनव दर्पण पृष्ठ 39

2. कथक नृत्य शिक्षा भाग 1एवं 2– डॉ. पुरू दधीच। **(**प्रथम संस्करण बिंदु प्रकाशन इंदौर**)**

3. नई शिक्षा पद्धति, (ISSN. NO- 2393.8153) –अनीता कुमार शर्मा,

4. कथक प्रसंग – संपादक रश्मि बाजपेयी **(**वाणी प्रकाशन**),04**

5. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य – डॉ. माया टाक।

6. शुक्ला, रेनू (2018) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में आंगिक एवं वाचिक अभिनय के स्वरूप का अध्ययन International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 05-06